

आयोजन समिति



संरक्षक

प्रो. यशवंत सिंह ठाकुर
माननीय कुलपति



निदेशक

प्रो. राजेन्द्र यादव
अध्यक्ष - संस्कृत विभाग



सह-संयोजक

डॉ. नौनिहाल गौतम
9826151335



सह-सचिव

डॉ. शशिकुमार सिंह
8989889371

कार्यकारिणी

डॉ. आर वेकटमुनि
डॉ. संजय नाइनवाड
डॉ. हिमांशु कुमार
डॉ. अफरोज बेगम
डॉ. अरविंद कुमार
डॉ. अमिज्ञान द्विवेदी
डॉ. अरविंद गौतम
डॉ. बबलू रे
डॉ. वसीम अनवर

डॉ. वन्दना राजौरिया
डॉ. योगेश कुमार पाल
डॉ. ऋषभ भारद्वाज
प्रवीण कुमार
चन्द्रपाल लोधी
सुधांशु कुमार
शैलेश तिवारी
भूपेंद्र लोधी
दीपाली बाहादुर
नैनिका लुहार

गुलशन कुमार
मिण्टु मण्डल
सौरभ मिश्रा
चित्रांश कन्हैया
दिग्विजय तिवारी
दीक्षा सांवले
तन्मय दास
भगीरथ बाईई
राजनन्दिनी

राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा, साहित्य और संस्कृति

10-11 मार्च 2026

(उभयविध माध्यम / Hybrid Mode)

प्रति,

प्रेषक

प्रो. राजेन्द्र यादव

निदेशक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

8120071137 ✉ sanskritsagar1946@gmail.com

बुक-पोस्ट



राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा, साहित्य और संस्कृति

10-11 मार्च 2026

(उभयविध माध्यम / Hybrid Mode)



भारतीय
ज्ञान
परम्परा

आयोजक

संस्कृत विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

सहयोग - शोध एवं विकास शाखा और आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ

हमारा विश्वविद्यालय

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (पूर्व नाम : सागर विश्वविद्यालय) की स्थापना 18 जुलाई 1946 को भारत के महान् शिक्षाविद् और प्रख्यात विधिवेत्ता डॉक्टर हरीसिंह गौर के द्वारा की गई है। 1300 एकड़ के वृहद् भू-भाग में फैला यह विश्वविद्यालय 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय घोषित हुआ। वर्तमान में 11 संकायों और 35 विभागों से युक्त इस विश्वविद्यालय में एजुकेशन मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र और मानव संसाधन विकास केन्द्र भी संचालित हैं। इसके अतिरिक्त एक समृद्ध पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास, बैंक, डाकघर, अस्पताल तथा शिक्षकों और कर्मचारियों के आवास की सुविधा भी उपलब्ध है।

संस्कृत विभाग

देश के संस्कृत जगत् में सुप्रसिद्ध इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही 1946 में संस्कृत विभाग की स्थापना हुई जिसमें साहित्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आधुनिक संस्कृत साहित्य, वेद, व्याकरण तथा दर्शन के क्षेत्र में शोध के नये आयाम उद्घाटित हुए। विभाग से त्रैमासिक संस्कृत शोध पत्रिका 'सागरिका' तथा सौंदर्यशास्त्र एवं रंगमंच की त्रैमासिक शोध पत्रिका 'नाट्यम्' निरन्तर प्रकाशमान हैं। विभाग के संस्कृत परिषद् द्वारा लगभग 75 महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 160 शोधार्थी पी-एच.डी. उपाधि तथा 6 मनीषी डी.लिट. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. रामजी उपाध्याय, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी आदि भारत सरकार के राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किये गये हैं। विभाग के द्वारा अब तक एक अन्तराष्ट्रिय सङ्गोष्ठी के साथ ही 50 से अधिक राष्ट्रीय सङ्गोष्ठियों और अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। विभाग के शिक्षकों द्वारा 300 से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया गया है। विभागीय पुस्तकालय में 5000 से अधिक मूल्यवान् पुस्तकों का संग्रह है। विभाग के अंतर्गत संचालित पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र में 6000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ भी विद्यमान हैं।

सङ्गोष्ठी का उद्देश्य

सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय सर्वज्ञानविदानाय भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से अद्यावधि अपनी गहनता, व्यापकता और समग्रता के लिए विख्यात रही है यह नित्य 'परात् परम् एति' श्रेष्ठ से श्रेष्ठ की ओर जाने वाली ज्ञान परंपरा अनेकानेक विद्याओं का आधार मात्र नहीं है अपितु इसका उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना तथा उसे जीवन के उन्नत आदर्शों और मूल्यों के साथ जोड़कर उसे उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति कराना है, अतएव यह परंपरा शिक्षा को आध्यात्मिकता के साथ संयुक्त करती है। इसी उद्देश्य को लेकर भारतीय ज्ञान परंपरा ने स्वयं को विभिन्न भाषाओं के माध्यम से, विभिन्न भाषागत साहित्यों के माध्यम से तथा तन्निष्ठ संस्कृति के माध्यम से महान् विस्तार दिया है।

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते ॥

अर्थात् जैसे-जैसे मनुष्य शास्त्र में प्रवेश करता जाता है वैसे-वैसे वह उसके ज्ञान रहस्य को, निगूढ़ विज्ञान को जानने में समर्थ होता जाता है। मनु के इस वचन के अनुसार प्रत्येक भाषा, साहित्य और संस्कृति को जानकर हम भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान पक्ष को, उसके नवाचार रूप में परंपरागत पक्ष को तथा उसके आध्यात्मिक पक्ष के रहस्य को भली-भाँति जान सकते हैं।

'भारतीय ज्ञान परंपरा में भाषा साहित्य और संस्कृति' विषयक इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में सुधी, चिंतकों एवं विषयविशेषज्ञों के द्वारा निर्धारित विषय पर नवीन चिंतन, विचार व विमर्श किया जाएगा।

सङ्गोष्ठी के प्रस्तावित उपविषय

- भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृति चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में साहित्यिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में काव्यचिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में संगीत चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में शैक्षिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में दार्शनिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में सामाजिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में राजनीतिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में आर्थिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में भौगोलिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में वैज्ञानिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में न्यायिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में व्यावसायिक चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रबन्धन चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में गणितीय चिन्तन
 - भारतीय ज्ञान परम्परा में चिकित्सकीय चिन्तन
- इन उप-विषयों से अतिरिक्त विषय भी स्वीकार्य होंगे।

आवश्यक निर्देश

- संगोष्ठी ऑफलाइन एवं ऑनलाइन उभयविध माध्यमों (Hybrid mode) में आयोजित होगी।
- पंजीकृत शिक्षक एवं शोधार्थी संगोष्ठी में प्रतिभाग कर सकते हैं।
- संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए प्रतिभागियों को Google Form भरना अनिवार्य होगा।
- पंजीयन शुल्क का प्रतिभागियों के लिए स्वरूप निम्नवत् होगा -
शिक्षक - Rs. 400, शोधार्थी - Rs. 200
- आवागमन, आवास एवं भोजन की व्यवस्था आमंत्रित अतिथि वक्ताओं के लिए रहेगी। प्रतिभागियों को उक्त व्यवस्था स्वयं करनी होगी। इस निमित्त अपेक्षित जानकारी हेतु प्रतिभागी दिनांक 8.03.2026 सायं 5.00 बजे तक निम्नलिखित नंबर पर संपर्क कर सकते हैं - 8839291939

- प्रतिभागियों के द्वारा अपना शोधपत्र Unicode/Kokila में Font-14 साइज में टाइप कर दिनांक **28.02.2026** तक dhsusagarika@gmail.com पर भेजना करना अनिवार्य होगा।

भुगतान करने हेतु

I) UPI ID: 44497867140@sbi II) QR Code

बैंक खाता विवरण

Bank Name: SBI Bank UTD Branch, Sagar, M.P.

A/c No.: 44497867140

IFSC: SBIIN0001143

ऑनलाइन पंजीयन हेतु लिंक एवं क्यू-आर कोड

<https://forms.gle/v9kbKVgVJngS9Ru36>



आमंत्रित अतिथि वक्ता

- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व कुलपति
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, कुलपति
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- प्रो. शिवशंकर मिश्र, कुलपति
महर्षि पाणिनि वैदिक संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन
- प्रो. विनोद कुमार मिश्र, कुलपति
रानी अवन्तीबाई लोधी विश्वविद्यालय, सागर
- डॉ. अजय तिवारी, कुलाधिपति
स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर
- प्रो. बालकृष्ण शर्मा, विभागाध्यक्ष
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, ग्वालियर
- प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष-संस्कृत एवं हिन्दी
विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
- प्रो. सरोज गुप्ता, प्राचार्य
पं. दीनदयाल उपाध्याय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर
- प्रो. गोपाललाल मीणा, आचार्य
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. संजय कुमार, सह आचार्य
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

परामर्शदात्री समिति

- प्रो. रश्मि सिंह
- प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत
- प्रो. अजित जायसवाल
- प्रो. श्वेता यादव
- प्रो. अनिल कुमार जैन
- प्रो. हिमांशु पाण्डे
- प्रो. चन्दा बैन
- प्रो. बी.आई. गुरु
- प्रो. नागेश दुबे
- प्रो. बी.के. श्रीवास्तव
- प्रो. अनिल तिवारी
- प्रो. अशोक अहिरवार